(1856-1920) तिलक (Bal Gangadhar Tilak)

19 (1) तिलक के राजनीतिक विचारों का क्रम उनके द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सन् 1889 में सदस्यता प्राप्त करने से प्रारम्भ होता है। उनका जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। सार्वजनिक सेवा उनके जीवन का लक्ष्य था जिसके प्रति उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन शुद्ध त्याग की भावना के साथ समर्पित कर दिया था। प्रारम्भ में विपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय की ही भाँति तिलक भी उदारवादी विचारधारा के समर्थक थे, किन्तु आगे चलकर उनके विचारों में आमूल चूल परिवर्तन आया। भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राष्ट्रविरोधी कार्यों ने तथा उनके स्वयं के राष्ट्रवादी विचारों ने उन्हें सदा के लिए उदारवादियों से अलग कर दिया। उग्रराष्ट्रवादी विचारधारा के प्रतिनिधि नेता के रूप में उन्होंने उदारवादी विचारों की आलोचना करते हुए उग्रराष्ट्रवाद के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। सन् 1895 के बाद तो वे ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता और दयालुता के झूठे दम्भ के विरोध में उठ खड़े हुए। उनके विचारों की उग्रता 1905 के बंग-भंग के साथ और भी मुखर हो उठी।

यद्यपि बाल गंगाधर तिलक प्लेटो, अरस्तू और सिसरो की भाँति के राजनीतिक विचारक नहीं हैं। उन्होंने हीगल, ग्रीन की भाँति किसी आदर्श राज्य का मॉडल भी प्रस्तुत नहीं किया

Pg 2

तिलक मूलत: एक कर्मयोगी थे जिन्होंने भारतीय स्वराज्य के लिए अपना जीवन होम कर दिया। उनका मानना था कि 'प्रार्थना और प्रतिवेदनों' से कुछ हासिल नहीं होगा। क्योंकि जब तक अंग्रेजों पर जनता का दबदबा नहीं होगा तब तक वे सत्ता हस्तान्तरित नहीं करेगा। उनका ~~मानना~~ कहना था इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जब किसी शासक ने स्वेच्छा से शासितों को सत्ता हस्तान्तरित किया हो। अत: हमें भी अपनी शक्तियों को संगठित करना होगा ताकि देश को आज़ाद कराया जा सके। तिलक, साधनों की संवैधानिकता के स्थान पर उनकी प्रभावशीलता को अधिक महत्व प्रदान करते थे।

भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता उनके चिन्तन की आधारशिला है। अत: उनकी कार्यपद्धति उदारवादियों से भिन्न 'यथार्थवादी' थी, आदर्शवादी नहीं। इस व्यवहारिक नीति का एक उदाहरण उनके इन दो शब्दों — 'Responsive co-operation' — में मिलता है जब 1919 अधिनियम द्वारा भारत को कुछ अधिकार दिए गए तो तिलक ने भी कहा कि जितना सहयोग अंग्रेज हमारे साथ करेंगे उतना ही हम भी उनके साथ। 'Responsive Co-operation' का यह विचार तिलक के यथार्थवादी चिन्तन का एक उदाहरण है। राजनीति एवं सामाजिक समस्याओं के हल के प्रति उनकी नीति का यही व्यावहारिक एवं यथार्थवादी स्वरूप था।

तिलक के राजनीतिक चिन्तन का अन्तिम उद्देश्य भारत को राजनीतिक दासता से मुक्त कराने हेतु 'स्वराज्य' प्राप्त करना था। उनका 'स्वराज्य' किसी वर्ग-विशेष के लिए बल्कि समस्त भारतीय जनता के लिए था।

तिलक के अनुसार 'स्वराज्य' केवल राजनीतिक
3/ माँग नहीं बल्कि नैतिक आवश्यकता भी है। तिलक का
उनका यह मानना था कि स्वतंत्रता के वातावरण में ही
स्वधर्म का पालन करते हुए लोग अपने नैतिक एवं
आत्मिक स्वरूप को निखार पायेंगे।
इस प्रकार संयमित, उत्तरदायी एवं लोक-शक्ति
पर आधारित सामाजिक, नैतिक एवं राजनीतिक व्यवस्था
को तिलक ने 'स्वराज्य' माना।
इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तिलक ने स्वदेशी,
बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा को महत्वपूर्ण माना।
तिलक का स्वदेशी एक प्रकार का आर्थिक शस्त्र था
जिसके माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवाद पर
प्रहार किया।
ब्रिटिश शासन के साथ हर मोर्चे पर असहयोग
करके ही उसे पंगु बनाया जा सकता है। अतः ~~बहिष्कार~~
शांतिपूर्ण बहिष्कार का समर्थन किया।
'स्वराज्य' की प्राप्ति के लिए उन्होंने राष्ट्रीय
शिक्षा को एक प्रमुख साधन माना तथा विदेशी शिक्षा का
बहिष्कार करने को कहा।
तिलक ने राष्ट्रवाद के विकास में सार्वजनिक
उत्सवों को महत्वपूर्ण स्थान दिया। राष्ट्रीयता के आवेश
को आध्यात्मिक रंग देने के लिए उन्होंने गणपति उत्सव
को फिर से आरंभ किया और साथ ही शिवाजी की
उपासना का पंथ भी शुरू किया। गणपति उत्सव द्वारा
उन्होंने एक धार्मिक उत्सव को सामाजिक एवं राजनीतिक
अर्थ दिया तथा शिवाजी उत्सव द्वारा राष्ट्रीय भावनाओं
को उभारने और संगठित करने का काम किया। तिलक का
कहना था कि उत्सव प्रतीक का काम करते हैं। उत्सवों
का दोहरा महत्व है —— एक ओर तो इनके माध्यम

Page 4

से एकता की भावना व्यक्त होती है और दूसरी ओर उत्सवों में भाग लेने वाले व्यक्ति यह अनुभव करने लगते हैं कि उनके संगठन और उनकी एकता को किसी श्रेष्ठतर कार्य में लगाया जा सकता है। राष्ट्रीय उत्सव, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज आदि देशवासियों के संवेगों और भावों में तीव्रता लाते हैं तथा उनकी राष्ट्रीय भावना को सुषुप्त नहीं होने देते। इसे राष्ट्रवाद का प्रतीकात्मक प्रदर्शन कहा जा सकता है जिससे सांस्कृतिक अभिवृद्धि होती है समृद्ध राष्ट्रवाद का निर्माण होता है।

तिलक के अनुसार राष्ट्रवाद कोई दृश्यमान स्थूल वस्तु नहीं है, एक तो एक भावना, एक प्रत्यय है और इस भावना को जाग्रत करने में देश के महापुरुषों की ऐतिहासिक स्मृतियाँ महत्वपूर्ण योग देती है। शिवाजी के मन में लोकसंग्रह की भावनाएँ थी। उन्होंने कभी स्थानीय स्वार्थों अथवा समाज के किसी वर्ग विशेष के हितों की दृष्टि से नहीं सोचा। इसलिए उनकी उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए उन्हें विभूति और ईश्वर का अवतार मानना अतिशयोक्ति नहीं है।

शिवाजी उत्सव का प्रचार करने के मूल में तिलक का विचार था कि भारतीय राष्ट्रवाद के पोषण के लिए यह पर्याप्त नहीं है कि पश्चिम के उदारवादी लेखकों के सिद्धान्तों को बौद्धिक रूप में अंगीकार कर लिया जाए बल्कि उसको पुष्ट करने के लिए भारतीय जनता के संवेगों और भावनाओं को उभारा जाए।

तिलक हिन्दू गौरव को दुर्बल नहीं देखना चाहते थे। व्यक्तिगत रूप से ~~उन्होंने~~ उन्हें हिन्दू धर्म एवं संस्कृति पर भारी गर्व था परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वे कोरे हिन्दू राष्ट्रवादी थे अथवा मुसलमानों के खिलाफ थे। आलोचकों का आरोप है कि तिलक हिन्दुओं की मुस्लिम विरोधी वदले की भावना के प्रतिनिधि थे।

5/ डॉ रजनी पालरीवाल के अनुसार तिलक ने राष्ट्रीय चेतना के साथ साथ हिंदुत्व भावना का सम्मिश्रण कर दिया था और इसलिए मुसलमानों ने राष्ट्रीय आन्दोलन से विमुख हुए। वेलेन्टाइन शिरोल ने भी तिलक को अति परम्परावादी ~~बता~~ बताते हुए मुस्लिम विरोधी सिद्ध करने की चेष्टा की किन्तु ये सभी धारणाएं दोषपूर्ण हैं और तिलक के राजनीतिक विचारों तथा कार्यों की गलत व्याख्या है।

निष्कर्ष :- जिन्ना, एम. ए. अंसारी और हसन इमाम ने तिलक की राष्ट्रवादी भावनाओं और समझौता की प्रवृति की सराहना की थी, क्योंकि उनकी बुद्धिमानीपूर्ण सलाह और नरम नीति के कारण ही 1916 का लखनऊ समझौता सफल हो सका था। शौकत अली तथा हसरत मुहानी तिलक को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। तिलक ने ही मुसलमानों के खिलाफत आन्दोलन में सहयोग का प्रस्ताव किया था। अली बन्धुओं की मुक्ति का प्रस्ताव भी कॉंग्रेस में तिलक ने ही किया था। वस्तुतः अपने व्यक्तिगत जीवन में हिन्दू प्रिय होते हुए भी ~~और~~ ~~अवश्य~~ ~~प्रभाव~~ तिलक का मुसलमानों एवं ईसाइयों से कोई द्वेष भाव नहीं था।